सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

BA - Part - III
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper - 8

साहित्य की सभी विधाओं में समर्थ पंडित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला' हिन्दी के सुप्रसिद्ध महाकवि थे। ये कविता के रचयिता मात्र नहीं स्वयं एक विराट महाकाव्य के नायक बनकर जिये और इतिहास बनकर उन्होंने अपनी जीवन लीला समाप्त की। इनका जन्म बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल नामक राज्य में 21 फरवरी 1899 ई० को हुआ था।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने साहित्यिक जीवन की शुरुआत रामकृष्ण मिशन द्वारा प्रकाशित पत्र 'समन्वय' के सम्पादन (1920-21) से होता है। ~~और यहीं से~~ इसी समय के आस-पास कलकत्ता के बाबू महादेव प्रसाद सेठ ने मतवाला निकाला। सूर्यकान्त त्रिपाठी की रचनाएँ मतवाला के पृष्ठों पर नियमित रूप से आने लगी। निराला की अनेक रचनाएँ इधर उधर कागजों में दबी और अप्रकाशित हो रह गयी। उनकी प्रकाशित कृतियों में अनामिका परिमल, गीतिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, आराधना आदि उल्लेखनीय ~~हैं~~ काव्य हैं। उन्होंने अप्सरा, अलका, निरुपमा आदि जैसे ~~कई~~ बहुप्रशंसित उपन्यास की भी रचना की।

यों तो हिन्दी साहित्य के छायावाद के उन्नायकों में 'प्रसाद', पंत, निराला, महादेवी वर्मा का उल्लेख है। पर पूर्णतः विचार किया जाय तो इसके प्रवर्तन का वास्तविक श्रेय निराला को दिया जाता है। निराला छायावाद से भी अधिक स्वच्छन्दतावाद के प्रतिनिधि कवि थे। उनके भावों में रूढ़ियों के प्रति बगावत और नवीनता होने के साथ हिन्दी की परम्परागत प्रेम है। छायावाद के कवि होने के बावजूद भी उन्होंने 'तुम और मैं' जैसे कविता में पारलौकिक सत्ता का आभास पाया है तो छोटी सी लुकुटी के सहारे राजमार्ग पर चलते हुए भिक्षुक का रेखा चित्र भी उपस्थित किया है। निराला ने उसकी दीन दुर्बल काया का अत्यंत कारुणिक शब्दों में चित्रण करते हुए लिखा है —

" पेट पीठ दोनों हैं मिलकर एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठी भर दाने को
भूख मिटाने को
मुँहफटी पुरानी झोली को फैलाता
वह आता — — — — — "

इलाहाबाद के जनपथ पर पत्थर तोड़ती मजदूरनी की आँखों में झाँककर उसकी विवश वेदना को भी देखा है। 'सरोज स्मृति' कविता तो निःसंदेह हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ शोकगीत है। इसमें कवि ने एकमात्र कन्या के स्वर्गारोहण की घटना का व्याख्यान तो किया ही है अपने जीवन के सारे संघर्ष और घात प्रतिघातों का भी निश्छल चित्र उपस्थित कर दिया है —

"दुःख ही जीवन की कथा रही
क्या कहूँ आज जो नहीं कही।"

निराला की सर्वश्रेष्ठ प्रबंधात्मक रचनाएँ 'राम की शक्तिपूजा' और 'तुलसीदास' हैं। एक ओर उसमें आवेगतत्व की प्रधानता है तो दूसरी ओर वस्तु संगठन के कसाव भी। वस्तुतः 'राम की शक्तिपूजा' मात्र पौराणिक कथा का प्रस्तुतीकरण नहीं है बल्कि इसके इसके माध्यम से निराला ने संसार की समयुगीन राजनीतिक स्थितियों की प्रतीकात्मक रूप रेखा प्रस्तुत की है। भारत रूपी सीता अंग्रेज रूपी रावण की दासता से तभी मुक्त हो सकी जब हनुमान बंदर, भालू जैसी जनता ने एक सूत्र में आबद्ध होकर अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता संग्राम में संघर्षरत हुई।

"होगी जय होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन।
कह महाशक्ति राम के वदन में हुई लीन।"

'कुकुरमुत्ता' में निराला ने गुलाब के माध्यम से पूँजीपतियों पर करारा व्यंग्य किया है। इस कविता के माध्यम से पूँजीपतियों को चुनौती देकर सर्वहारा वर्ग ~~पर ......~~ की श्रेष्ठता का स्वर मुखर किया है।

"अबे सुन बे गुलाब
भूल मत गर पाई खुशबू, रंगो आब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतरा रहा कैपिटलिस्ट,
बहुतों को तूने बनाया है गुलाम।
तू नहीं मैं ही बड़ा।"

'जागो फिर एक बार' शीर्षक कविता में 'निराला' भारतवासियों के प्राचीन गौरवमय वीरत्वपूर्ण कर्मों एवं त्याग बलिदानों का स्मरण दिलाते हुए भारतवासियों को अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देते हुए कहते हैं कि सिंहनी की गोद से उसके शिशु को छीनने का साहस किसी में नहीं है। केवल भेड़ माताएं ही अपने शिशुओं को छिनते हुए विवश भाव से देखती रही हैं क्योंकि

"मरण को जिसने वरा है
उसी ने जीवन भरा है।"

~~भारतमाता की~~

निराला के काव्य का वैचारिक आधार मुख्य रूप से मुक्ति का चिंतन था। निराला की कविताओं में भी "भारतीय नवजागरण की विचार प्रणालियों के आधार एक ही नहीं हैं। "महाराज शिवाजी का पत्र" शीर्षक कविता का वही वैचारिक आधार नहीं है जो "बादल राग या फिर "राजे ने अपनी रखवाली की" जैसी कविताओं का है। हालांकि "स्वतंत्रता के मूल्य को फलित देखने की चाह तीनों कविताओं के वाचकों को है जो इस दौर का आधारभूत मूल्य है, फिर भी "महाराज शिवाजी का पत्र" वस्तुगत रूप में अतीत के उस सांप्रदायिक वैचारिक आधार की कविता ही ठहरती है जिसका पोषण राजे महाराजे करते रहे, अंग्रेज शासक भी करते रहे। "बादल राग" कृषक मुक्ति की विचारधारा की कविता है, 'राजे ने अपनी रखवाली की" का वैचारिक आधार मजदूर वर्ग की विचारधारा अर्थात् मार्क्सवाद है।

इनकी भाषा इतनी सरल, साफ और पारदर्शिनी है कि सूर और मीरा के भाव गीतों का सहज ही स्मरण हो जाता है—

"बाँधो न नाव इस ठाँव बंधु!
पूछेगा सारा गाँव, बंधु!

निराला विद्रोही चेतना के कवि थे। उनकी कविता में शोषण अन्याय के विरुद्ध तीव्र असंतोष है व अपराजेय भाव से उदात्त मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष करते हैं। उनका काव्य अनेक प्रतीकों से भरा हुआ है। उसमें संघर्ष के प्रतीक हैं, क्रांति के प्रतीक हैं और नए जीवन मूल्यों के प्रतीक हैं। 'बादल' 'निराला' के लिए क्रांति का प्रतीक है और नए जीवन मूल्यों का प्रतीक है।

निराला ने खड़ी बोली हिन्दी के सृजनात्मकता को निखार कर सुन्दर रूप दिया। उन्होंने सूक्ष्म से सूक्ष्म और गहन से गहन भावों को व्यक्त करने के लिए सक्षम भाषा का प्रयोग किया है। उनकी कविता छंद के बंधन को तोड़कर नए काव्यरूपों का निर्माण करती है, जीवन के अनुकूल स्वाधीन छंद का निर्माण करती है। जीवन और समाज की लय को अपनाकर निराला आगे बढ़ते हैं इसलिए उनकी कविता में मौलिकता, ताजगी और नवीनता है।